जिला कोरबा के विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी और विकासखण्ड स्त्रोत समन्वयक के नाम और मोबाईल नं.

क्र.	विकासखण्ड	वि.खं.शि.अ. का नाम	मो.नं.	वि.खं.स्त्रोत सम. का नाम	मो.नं.
1	कोरबा	संजय अग्रवाल	9425545500	विपिन शर्मा (ग्रा.) जे.एस.पोर्ते (श.)	8109971567 810930929
2	कटघोरा	जी.आर.राजपूत	9981729417	प्रहलाद साहू	9981144164
3	करतला	संदीप पाण्डेय	9993657118	अजय तिवारी	9752754604
4	पाली	जनार्दन सिंह	9406278336	आई.पी.कश्यप	8103638367
5	पोड़ीउपरोड़ा	दिनेश लाल	9691999511	के.एल.डहरिया	9826632807

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

DISTRICT INSTITUTE OF EDUCATIONAL & TRAINING (DIET) KORBA (C.G.)

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाईट) कोरबा (छ.ग.)

TelePhone : 07759-228048, Fax : 07759-227426, E-mail : dietkorba@gmail.com

केन्द्र प्रवर्तित योजना सत्र 2017-18 के अंतर्गत प्रायोजनाओं के नाम, लक्ष्य, अनुमानित बजट व कार्यक्रम प्रभारी की सूची पी.ए.सी. में अनुमोदन हेतु

क्र.	प्रायोजना का नाम	लक्ष्य	अनुमानित बजट	कार्यक्रम प्रभारी	अपेक्षित तिथि
1	जिला जेल के कैदियों के लिये चेतना विकास मूल्य शिक्षा	280	0.15 लाख	जी.एस.डिक्सेना	अगस्त 2017
2	ई.जी.आर. एवं कमाल प्रशिक्षण	600	6.00 लाख	आर.एच.शराफ	अगस्त 2017
3	आर्ट और क्राफ्ट	500	1.00 लाख	पी.प्रधान	नवम्बर 2017
4	संस्कृत को जानिए	50	0.60 लाख	एस.के.कटकवार	सितम्बर 2017
5	शैक्षिक सामग्री निर्माण	100	2.00 लाख	आर.के.तिवारी	अप्रैल 2017
6	सामुदायिक सहभागिता	500	0.75 लाख	डी.डी.रात्रे	नवम्बर 2017
7	एम.ओ.ओ.सी.	215	2.00 लाख	पी.के.कौशिक	दिसम्बर 2017
8	बी.ई.ओ. / बी.आर.सी. का उन्मुखीकरण	50	0.50 लाख	पी.के.कौशिक	प्रत्येक माह
9	के.जी.ए.व्ही. स्वास्थ्य प्रशिक्षण	500	0.50 लाख	जी.कुमार	नवम्बर 2017
10	उत्कृष्ठ शिक्षकों का सम्मान	50	0.40 लाख	एच.एस.लकरा	मार्च 2018
11	कमतर प्रदर्शन वाले शाला के शिक्षकों का उन्मुखीकरण	600	6.00 लाख	एच.एस.लकरा	सितम्बर 2017
12	पी.एल.सी. शिक्षकों का उन्मुखीकरण	200	2.00 लाख	यू.पी.साहू	अगस्त 2017
13	कम्प्यूटर प्रशिक्षण	100	1.00 लाख	आर.के.पसीने	जनवरी 2018
14	पैडागॉजी आधारित अध्यापन कौशल	100	1.00 लाख	ए.के.पोद्दार	अगस्त 2017
15	विज्ञान प्रयोगशाला का निर्माण	-	1.00 लाख	पी.सी.पटेल	दिसम्बर 2017
16	वार्षिक प्रत्रिका निर्माण	1000	1.00 लाख	आर.एच.शराफ	त्रैमासिक
17	विज्ञान प्रशिक्षण	100	1.20 लाख	पी.सी.पटेल	अक्टूबर 2017
18	क्रियात्मक अनुसंधान	50	2.00 लाख	ए.के.पोद्दार	अगस्त 2017
19	शैक्षिक भ्रमण	10	1.00 लाख	एम.ए.एक्का	नवम्बर 2017
	योग -		30.00 लाख (तीस लाख रुपये मात्र)		

(एस.के.प्रसाद)
प्राचार्य / पदेन सचिव
डाइट कोरबा

(इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल)
मुख्य कार्यपालन अधिकारी / पदेन उपाध्यक्ष
जिला पंचायत कोरबा

(पी.दयानंद)
कलेक्टर / पदेन अध्यक्ष
जिला-कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 1
जिला जेल के कैदियों के लिए चेतना विकास मूल्य शिक्षा

प्रस्तावना :-

आज संसार का कोई व्यक्ति सुखी नहीं है, व्यक्ति स्तर पर तनाव, घूटन, परिवार स्तर पर बिखराव व टूटन, समाज स्तर पर विखण्डन एवं प्रकृति स्तर पर असंतुलन उत्पन्न हो गया है। लगभग 20 वर्ष की आयु तक की शिक्षा में क्या पढ़े? क्या समझें?क्या करें कि धरती पर सभी मानव सुखपूर्वक जीवन जी सकें।

आज दूरगमन, दूरदर्शन, दूरश्रवण आदि माध्यमों से भौतिक दूरियॉ लगभग समाप्त हो गई है। व्यापार, व्यवसाय, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन, शोध, मीडिया व फिल्म आदि कारणों से विभिन्न देशों के बीच आदान प्रदान काफी बढ़ा है। संसार बहुत तेज गति से सभी क्षेत्रों में परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। इस परिवर्तन के दौर में पुरानी परम्पराएँ, जीवन शैलियॉ, विचार शैलियॉ, मान्यताएँ आदि सभी तेजी से बदल रही है, लेकिन इस बदलाव की दिशा एवं दशा क्या है? यह एक विचारणी मुद्दा है।

विज्ञान के इस युग में सारी भौतिक दूरियां घटने के बावजूद मानव-मानव के बीच की खाई बढ़ती जा रही है। यह खाई सुरसा के समान मुंह फैला रही है। संबंधों की पहचान का तरीका उपलब्ध न होने के कारण परिवार में बिखराव बढ़ते चले जा रहे है। आज व्यक्ति इतना स्वार्थी हो गया है कि अपने लाभ के लिए दूसरे का गला काटने में उतारू हो गया है। इसका मुख्य कारण है मानवीय चेतना का अभाव आज मानव अपराध क्यों करता है? इसका मुख्य कारण है व्यक्ति का स्वार्थ। वह अपने स्वार्थ के लिए हिंसा पर उतारू हो जाता है और पूरी जिंदगी जेल में गुजार देता है। आज के इस दौर में चेतना विकास मूल्य शिक्षा सभी के लिए आवश्यक हो गया है ताकि व्यक्ति सुखपूर्वक जीवन यापन कर सके।

उद्देश्य :–

चेतना विकास शिक्षा का उद्देश्य निम्नलिखित है।

1. संसार का हर मानव सुखपूर्वक एवं उत्सव पूर्वक जीवन यापन कर सके।
2. वह पारिवारिक व मानवीय संबंधों को समझ सके।
3. स्वार्थ की भावना से परे हटकर समाज कल्याण की भावना की भावना जागृत हो सके।
4. व्यक्ति समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर साथ-साथ जीना व रहना सीख सके।
5. व्यक्ति के पैसे के पीछे भागने की मानसिकता दूर हो सके।
6. व्यक्ति हिंसा एवं क्रोध का त्याग सके।
7. परिवार एवं समाज में शिकायत से मुक्त होकर सही जीवन जीने का तरीका खोज सके।
8. समाज के साथ अपने को ढाल सके।
9. समाज के विघटन कारी तत्वों आतंकवाद, नक्सलवाद से दूर रह सके।
10. व्यक्ति "असुरक्षा-मय धनसंग्रह शोषण विरोध संघर्ष युद्ध असुरक्षा के चक्र को तोड़ सके।
11. परीक्षा में अपराध की भावना कम किया जा सके।
12. बंदियों में उन मानवीय मूल्यों की समझ विकसित किया जा सके जिनसे व्यक्तियों में अपराध की पुनरावृत्ति न हो।
13. बंदियॉ की मुक्ति पश्चात समाज में स्व पुर्नस्थापना के लिए प्रेरणा प्रदान किया जा सके।

लक्ष्य क्षेत्र / लक्ष्य समूह

जिला जेल कोरबा के लगभग 280 कैदी लाभान्वित होंगे।

गतिविधि / क्रियाकलाप –

जिला जेल के जेलर से मिलकर एवं अनुमति लेकर कैदियों के लिए 15 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा जावेगा। प्रतिदिन एक घंटा कालखण्ड होगा। एवं यह प्रशिक्षण एक ही चरण में पूरा होगा। मास्टर्स ट्रेनर एवं डाइट के अकादमिक सदस्य मिलकर माड्यूल का निर्माण करेंगें। एवं दो-दो मास्टर्स ट्रेनर प्रतिदिन जेल जाकर कैदियों को प्रशिक्षण देंगें।

फालो अप मानिटरिंग –

इस प्रशिक्षण के पश्चात फालोअप मानिटरिंग को आवश्यकता नहीं है। लेकिन जब कैदी गण सजा काटकर अपने-अपने घर जावेंगें तो उनसे सम्पर्क करके उनके विचार जाने जा सकते हैं।

अपेक्षित परिणाम –

1. कैदियों के अपराध करने की प्रवृति कम होगी।
2. वे अपने परिवार के साथ एवं समाज के साथ सामन्जस्य स्थापित करके सुख एवं शांति पूर्वक जीवन व्यतीत कर पायेंगें।
3. हिंसा व क्रोध का त्याग करके साथ-साथ रहने की प्रवृति का विकास होगा।
4. नेट का प्रयोग करना सीखना।
5. कम्प्यूटर में साफ्टवेयर का प्रयोग करना सीखना।
6. नेट के माध्यम से शिक्षा संबंधी वेवसाइट के प्रयोग के संबंध मे जानना।
7. सभी प्रकार के पत्र टंकण करना सीखना।
8. नेट का प्रयोग कर संदेश भेजना एवं प्राप्त करना।
9. कम्प्यूटर में गणितीय गणना करना सीखना।

अनुमानित बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 15000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 2

''प्राथमिक शालाओं में कक्षा 1 व 2 पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए ई.जी.आर. व कक्षा 3,4 व 5 में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों के लिए कमाल प्रशिक्षण''

प्रस्तावना :–

प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा मे शिक्षा देने से किसी विषय वस्तु की अवधारणा या समझ स्पष्ट रूप से बन पाती है। चूंकि भाषा मानवीय अभित्याक्ती का सशक्त माध्यम है। वर्तमान बदलते वैश्विक परिदृश्य मे अंग्रेजी भाषा का सामान्य ज्ञान अनिवार्य सा हो गया है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में।

जैसे :- व्यापार, उच्च शिक्षा, तकनीकी एवं निरंतर बदलती हुई जीवन-शैली में अंग्रेजी भाषा का एक विशेष स्थान बन गया है।

अतः यदि प्राथमिक विद्यालयीन स्तर से ही विद्यार्थी को अंग्रेजी भाषा को सुनने व बोलने का अवसर दिया जाए तो वे इसे आसानी से सीख सकेगें तथा आगे चलकर शैक्षिक तकनीकी साधनों जैसे कम्प्यूटर, मोबाईल, आदि का उपयोग कर अपने शिक्षा-स्तर को ऊंचा उठने मे समर्थ हो सकेंगे। अपने देश, राज्य शहर गांव के लिए अच्छा व कुशल नागरिक बन पायेंगे।

विभिन्न प्रकार की बोली और भाषाओं के मध्य में अंग्रेजी विषय एवं भाषा की जानकारी रखने से जीवन के समस्त सरोकरो का समझ सकने में समर्थता का हासिल कर पायेंगे।

वर्तमान में राज्य शासन की मंशा नुरूप समस्त जिले में अंग्रेजी भाषा के लिए शालाओं में शैक्षिक वातावरण निर्माण पर बल दिया जा रहा है ताकि प्रारंभिक स्तर से ही बच्चे अंग्रेजी भाषा सुनने समझने व बोलने में दक्ष हो सके और हमे अपने व्यवहारिक एवं दैनिक जीवन मे ंउपयोग कर सके। जिसमें वे अपने जीवन में शिक्षा का अदभुत आनंद महसूस कर सकेंगे।

बच्चों के साथ सीखने-सिखाने का कार्य किस प्रकार किया जावे ताकि कम समय में वे इन आधारभूत दक्षताओं को बड़ी सहजता और आत्मविश्वास के साथ प्राप्त कर ले और अपनी भाषा की सोंच को बता पायें। इसके लिए हमें उनकी आधारभूत क्षमताओं जैसे-सुनना, बोलना, पढ़ना, करना और लिखना इन्हें मजबूती देने की जरूरत हैं। प्रथम संस्था ने इन सभी क्रियाओं को एक साथ करने का एक विशेष नाम दिया है कमाल (CAMAL) - Combined Activities for Maximized Learning) अर्थात अधिकतम सीखने के लिए संयुक्त गतिविधियां कमाल गतिविधि को प्राथमिकता देता है। इसके अन्तर्गत हम आसान से मुश्किल मूर्त से अमूर्त, सरल से जटिल और परिचित से अपरिचित की बात करते है।

1. जो मैं सुनता हू, मैं भूल जाता है।
2. जो मैं सुनता व देखता हूं वह थोड़ा बहुत मुझे याद रहता है।
3. जो मैं सुनता और देखता हूं और जिसके बारे में प्रश्न करता हूं या किसी के साथ चर्चा करता हूं तो समझने की शुरूआत होती है।
4. जो मैं सुनता और देखता हूं जिस पर चर्चा करता हूं और जिसे स्वयं करके देखता हूं वह मुझे मेरे कौशल को विकसित करने और ज्ञान हासिल करने में मदद करता है।

वास्तव में कमाल गतिविधि के द्वारा कक्षा 3 से 5 तक विद्यार्थियों को कक्षा के अनुसार नहीं बल्कि स्तर के अनुसार सिखाया जावे तो वे निम्न स्तर से उच्च स्तर की ओर अग्रसर होंगे।

कमाल व सबसे महत्वपूर्ण वृहद वाक्य है "बच्चों की काबिलियत पर विश्वास रखों, उनहें अवसर दो, उन्हें अपने आप से सीखने का आनन्द लेने दो"।

यदि बच्चे स्वयं गतिविधि करके सीखते है तो उनका ज्ञान ठोस व स्थायी होता है। इसी प्रकार कक्षा 1 व 2 में ई.जी.आर. पद्धति से पढ़ाया जाने बच्चों को सिर्फ गतिविधियां हो करायी जावे तो वे किसी भी तथ्य को आसानी से ग्रहण कर लेते है। वर्ष 2014 में असर की जो रिपोर्ट आई वह चौंकाने वाला

था इसे प्रारंभ में जिला स्तरीय संस्थान डाइट द्वारा ही अभ्यास शालाओं में करने का निर्णय लिया गया था। इस वर्ष हम पूरे जिले में केमल को लागू करने जा रहे है ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो सके। एवं शासन की महति योजना ए.पी.जे. गुणवत्ता सुधार का लक्ष्य पूरा हो सके।

उद्देश्य :–

इस प्रशिक्षण का मूल उद्देश्य यह है कि शिक्षकों को इस प्रकार प्रशिक्षण करना कि वे बालको में निम्न गुणों का विकास कर सकें।

1. अंग्रेजी भाषा के वर्णे की पहचान कर सकेंगे।
2. अंग्रेजी भाषा को सुनकर बोलने में समर्थ होंगे।
3. अंग्रेजी भाषा के शब्दों को सुनकर समझ पायेंगे।
4. परिवेश में पायी जाने वाली वस्तुओं के अंग्रेजी नाम से परिवर्तित होंगे।
5. अंग्रेजी भाषा में छोटी-छोटी कविताओं की लय-ताल एवं एक्शन के साथ गाकर आनंद का अनुभव कर पायेंगे।
6. विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा के शब्द कोष में वृद्धि।
7. ध्यानपूर्वक सुनने एवं समझने की क्षमता का विकास।
8. अभिव्यक्ति का विकास
9. बच्चों के आत्मविश्वास में वृद्धि हो एवं बच्चे बिना झिझक अपनी बात सभी के सामने रख सकें।
10. बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि हो।
11. बच्चों के तर्कशक्ति का विकास का।
12. गणितीय अवधारणाओं व संक्रियाओं को बालक आसानी से समझ सके।
13. भाषा में वर्ण पहचान कर शब्द का निर्माण कर सके।
14. धारा प्रवाह एवं समझ के साथ पढ़ना सीख सके।
15. समझकर लिखने की दक्षता का विकास हो।
16. अभिव्यक्ति को लेखन के माध्यम से प्रकट कर सके।
17. बालक स्वयं लेखन का सके।
18. बालक गणित के प्रश्नों को स्वयं हल कर सके।

लक्ष्य क्षेत्र एवं लक्ष्य समूह :–

कोरबा जिला के वि.खं. कोरबा के 25 अभ्यास शाला एवं वि.खं. करतला के 222 प्राथमिक शालाओं के 600 शिक्षक।

गतिविधि एवं क्रियाकलाप :–

यह प्रशिक्षण 2 सभों में 3-3 चरणों मे सम्पन्न होगा। प्रथम सत्र मे विद्यालयों के आधे शिक्षक प्रशिक्षण हेतु आवेगें शेष बचे हुए आधे शिक्षक द्वितीय सत्र में आयेंगें इस प्रकार 6 चरणों मे प्रशिक्षण आयोजित होगा और प्रत्येक चरण में 220 प्रतिभागी होंगे। प्रशिक्षण की अवधि 5 दिवस का होगा प्रथम दो दिना में ई.जी.आर. एवं 3 दिवस प्रत्येक चरण के लिए छः स्त्रोत होंगे। जो डी.एड. छात्राध्यापक है तथा जो एस.सी.ई.आर.टी. से प्रशिक्षण लेकर आये है उन्हें स्त्रोत व्यक्तियों के रूप में रखा जावेगा। प्रथम संस्था द्वारा निर्मित संदर्भित हो उपयोग में लाया जावेगा। समय सारणी बनायी जावेगी तथा जिला शिक्षा अधिकारी महोदय के आदेश द्वारा शिक्षकों को प्रशिक्षण के लिए बुलाया जावेगा। यह प्रशिक्षण पूर्णतः आवासीय होगा।

फालो अप मॉनिटरिंग

कोरबा जिला के कोरबा एवं करतला विकास खण्डों के विद्यालयों का डी.ई.ओ., डाइट प्रिसीपल, डाइट एकेडमिक मेंबर, डी.ई.ओ., बी.आर.सी. और सी.ए.सी.एस. द्वारा समय-समय पर फालोअप मानिटरिंग की जावेगी तथा यह देखा जावेगा कि इन विद्यालयों में कमाल विधि से शिक्षण दिया जा रहा है या नहीं ? तथा बच्चे इस विधि से कितना सीख पड़ रहे हैं। तथा वे समूह में गतिविधि करके सीख पा रहे हैं या नहीं।

अपेक्षित परिणाम

1. विद्यार्थियों में अंग्रेजी भाषा सुनने, बोलने एवं शुद्ध उच्चारण करने की कौशलों का विकास होगा।
2. अक्षर कार्ड, चित्र कार्ड की पहचान कर मिलान करने में समर्थ होंगे।
3. विद्यार्थियों के अंग्रेजी भाषा में शब्द कोष वृद्धि होगी।
4. परिवेश में पायी जाने वाली वस्तुओं के नाम अंग्रेजी में बोल पायेंगे।
5. कविताओं को लय-तान एवं एक्शन के साथ गाकर समझ पाने में सक्षम होंगे।

इस प्रशिक्षण से कोरबा एवं करतला विकासखण्ड के शिक्षक कमाल विधि से अध्यापन कराके अपने विद्यालयों को उच्च स्तर तक पहुंचा सकते हैं। तथा शासन की ए.पी.जे. अब्दुल कलाम गुणव्त्ता सुधार वर्ष योजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। चूंकि यह बाल केन्द्रित गतिविधियों पर आधारित कार्यक्रम है। अतः अवश्य ही बालकों के ज्ञान में उत्तरोत्तर प्रगति होगी।

बजट :- इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 600000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रयोजना – 3
आर्ट और क्राफ्ट

प्रस्तावना –

लेखिका महादेवी वर्मा ने कहा है "शिक्षा का वाहन कला है।" कला जीवन की साधना है। कला जीवन को समृद्ध बनाती है। उससे जीवन में सुंदरता आती है। कला जीवन यात्रा को समृद्ध बनाने वाली वस्तु है। कला जीवन के प्रत्येक पहलू की पूर्णता प्रदान करने की एक प्रक्रिया है। कला जीवन को देखने का नीवन ढंग प्रदान करती है। कला विहीन व्यक्ति बिना संस्कृति के समाज की तरह होता है। शालेय शिक्षा में कला का स्थान महत्वपूर्ण है। बिना कला शिक्षा के कोई भी बच्चा एक सफल इंसान या कलाकार नही बन सकता है। कही न कही उसे कला शिक्षण ग्रहण करना अनिवार्य हो जाता है।

जिस प्रकार शिक्षकों को कला का प्रशिक्षण देकर विद्यालयों के बच्चों तक पहुंचाना मुख्य उद्‌देश्य है। तथा स्वयं जाकर विभिन्न बालिका आश्रमों तथा शालाओं में कला के गुणों को पहुंचाया जा सकता है। जिस प्रकार विद्यालय में अन्य विषयों जैसे - गणित, हिन्दी, विज्ञान, अंग्रेजी, भूगोल, संस्कृत, सामाजिक विज्ञान का जो स्थान है उसी प्रकार कला शिक्षण के द्वारा बच्चों में कला के गुणों का विकास किया जा सकें। कला प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में उपयोग होता है। कला के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है। कला व्यक्ति को रोजगार से जोड़कर अर्थोपार्जन कर सकता है। गांधी जी ने कला को भविष्य की जीवन बीमा कहा है। अर्थात जिस प्रकार बीमा व्यक्ति के भविष्य के आर्थिक पहलू को सुरक्षित रखता है, उसी प्रकार व्यक्ति के पास अगर डिग्री डिप्लोमा प्रमाण प्रत्र नही है और अगर व्यक्ति कला में दस है तों वह व्यवसाय से जुड़ सकता है तथा अपना अपने परिवार का जीविकोपार्जन के लिये अर्थोपार्जन कर सकता है।

उद्‌देश्य :–

इसके उद्‌देश्य निम्नलिखित है –

1. बच्चों में रचनात्मक व सृजनात्मक कला के गुणों का विकास करना।
2. बच्चों के मानसिक विकास को सुदृढ़ बनाना।
3. बच्चों के व्यक्तित्व का पूर्ण विकास करना।
4. छात्राओं में हस्तकला के गुणों का विकास करना।
5. बच्चों के अन्तर्निहित प्रतिभा को अभिव्यक्त करवाना।
6. कला शिक्षा के द्वारा बच्चों को रोजगार व्यवसाय से जोड़ने के कला का विकास करना।
7. बच्चों में स्व प्रेरणा के गुणों का विकास।

लक्ष्य क्षेत्र –

कोरबा जिले के पांच ब्लाक होंगे। जिसमें प्राथमिक व माध्यमिक शला के आश्रम शाला, कस्तूरबा आवासीय विद्यालय, विभिन्न विद्यालय होंगे। किसी भी विद्यालय में विधा होंगे। सभी विद्यालयों में अलग-अलग कला का प्रदर्शन किया जायेगा। संकुल स्तर पर भी सीखाया जायेगा।

लक्ष्य समूह –

आर्ट एवं क्राफ्ट प्रशिक्षण स्त्रोत व्यक्ति डाइट के सहायक प्रध्यापक व व्याख्यातागण होंगे। आवश्यकतानुसार स्त्रोत व्यक्ति के रूप में बाहर से एक्सपर्ट बुलाया जायेगा।

गतिविध / क्रिया कलाप – इस प्रशिक्षण से संबंधित गतिविधियां निम्नलिखित है-

1. माड्यूल निर्माण किया जायेगा।
2. शिक्षकों की समय सारणी बनायी जायेगी।
3. प्रशिक्षण के पथम दिवस पंजीयन किया जायेगा।

4. प्रशिक्षण में आयें शिक्षकों का प्री व पोस्ट टेस्ट लिया जायेगा।
5. समय सारणी के आधार पर प्रशिक्षण व डेमो करवाया जायेगा।

फालोअप मॉनीटरिंग –

प्रशिक्षण समाप्ति के पश्चात् पांचों विकासखण्ड का मॉनीटरिंग किया जायेगा। आश्रम शालाओं व विद्यालयों के बच्चों व शिक्षकों से संपर्क किया जायेगा।

मॉनीटरिंग डाइट के प्राचार्य, उपप्राचार्य तथा व्याख्यातागणों के द्वारा किया जायेगा।

अपेक्षित परिणाम –

1. शालाओं के बच्चें कला के गुण सीखेंगे।
2. बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होगा।
3. बच्चों में शाला आने में सूची बढ़ेगी।
4. बच्चे कला के विभिन्न विधाओं में दक्ष होंगे।
5. बच्चों में हस्त कला सृजन कला के गुणों का विकास होगा।
6. कला विषय के अंतर्गत ललित कला, गीत, नृत्य, संगीत का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
7. स्थानीय कला व व्यवसायी कला का विश्लेषण करना।
8. बॉस कला, मिट्टी कला, काष्ठ कला, मूर्तिकला, की व्याख्याता तथा डेमो कराया जायेगा।
9. क्राफ्ट के अंतर्गत सिलाई बुनाई कढ़ाई का प्रशिक्षण तथा डेमो कराया जायेगा।
10. पाक कला के अंतर्गत केक, कुकीस बनाने की कला तथा एक्सपर्ट के द्वारा डेमो कराया जायेगा।
11. रंगोली, पेंटिंग (अभक, खर, पोस्टर) आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा डेमो कराया जायेगा।
12. स्थानीय कला के अंतर्गत स्थानीय चित्रकला वास्तु शिल्प, लोकगीत आदि का प्रशिक्षण दिया जायेगा।
13. स्थानीय नाटक व स्थानीय लोकगीत की व्याख्याता व चर्चा किया
14. प्रशिक्षण में आये शिक्षकों की सहभागिता लिया जायेगा।
15. प्रशिक्षण में प्रोजेक्टेड व गाईड की व्याख्याता किया जायेगा।

बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 100000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 4
संस्कृत को जानिए (संस्कृत भाषा प्रशिक्षण)

प्रस्तावना :–

संस्कृत भाषा - हमारे वेदों एवं पुराणों की भाषा है। संस्कृत भाषा का ज्ञान हमें हमारी प्राचीन संस्कृती को जानने के लिए आवश्यक है। अतः संस्कृत भाषा का ज्ञान हमारे लिए आवश्यक है। इसलिए शासन ने संस्कृत भाषा को एक विषय के रूप में हमारी उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ना सुनिश्चित किया हुआ है। किन्तु सामान्य रूप से यह देखा गया है कि संस्कृत भाषा के शिक्षण को हमारे विद्यालयों में केवल औपचारिक स्वरूप में खानापूर्ति की तरह ही लिया जा रहा शालाओं में इसका एक कारण शिक्षकों की संस्कृत भाषा में दक्षता की कमी भी है। हमारी शालाओं में कला शिक्षकों को संस्कृत भाषा शिक्षण के लिए अतिरिक्त कार्य के रूप में सौंप दिया जाना भी एक प्रवृत्ति के रूप में देखा गया है। यह संस्कृत भाषा शिक्षण मे ंउत्कृष्टता प्राप्त न करने का भी एक कारण है। अतः कोरबा जिले के उच्च प्राामिक विद्यालयों संस्कृत पढ़ाने वाले शिक्षकों को संस्कृत प्रशिक्षण की आवश्यकता प्रतीत हुई। जिससे भाषाओं की जननी कहलाने वाली भाषा के अध्ययन अध्यापन को रूचिकर तथा बोधगम्य, सरल बनाने की दिशा में एक अगला कदम रखा जा सके।

उद्‌देश्य :–

1. शिक्षकों को संस्कृत भाषा में प्रवीण कर शिक्षण कार्य में प्रविणता लाना।
2. संस्कृत भाषा शिक्षण में आने वाली सामान्य रूकावटों का हल - प्रशस्त किया जा सकेगा।
3. संस्कृत भाषा अध्यापन के लिए शिक्षकों में रूचि उत्पन्न करना।
4. संस्कृत भाषा शिक्षण करने वाले शिक्षकों में आत्म विश्वास जगाना।
5. शालाओं में संस्कृत शिक्षण के लिए रूचिकर वातावरण का निर्माण कराना।
6. संस्कृत व्याकरण के भाषायी तत्वों का शिक्षकों में पुनः प्रकाश करना।
7. बच्चों को संस्कृत संभाषण के लिए सक्षम बनाना।
8. संस्कृत के विभिन्न कौशलों का विकास करना।

लक्ष्य क्षेत्र :–

कोरबा जिले के पांचों विकासखण्ड के दस-दस उच्च प्राथमिक शालाओं में संस्कृत पढ़ाने वाले शिक्षकों को लक्ष्य क्षेत्र में रखा गया है। इस प्रकार जिले के 50 स्कुलों के 50 शिक्षक प्रशिक्षण का लक्ष्य क्षेत्र है।

गतिविधि :–

कार्यक्रम को दो चरणों में पूरा किया जा सकेगा।

प्रथम चरण (माड्‌यूल निर्माण) जिले के विभिन्न स्कुलों से संस्कृत भाषा शिक्षण में संलग्न, संस्कृत का विशिष्ट ज्ञान रखने वाले तथा संस्कृत अध्यापन में विशेष रूचि रखने वाले शिक्षकों को संदर्भित निर्माण कार्यशाला में आमंत्रित किया जायेगा।

आमंत्रित शिक्षकों के संग चर्चा कर कक्षा अध्यापन में आने वाली सामान्य व विशिष्ट कठिनाइयों को चिन्हित किया जावेगा।

सर्वमान्य कठिनाइयों को चयनित कर उसके हल का सर्वोत्तम प्रकार चयनित किया जायेगा। संस्कृत भाषा के अध्ययन अध्यापन की कुछ विशेष युक्तियों का चयन किया जा सकेगा।

संस्कृत भाषायी क्षेत्र में यदि कहीं नवाचार किया गया हो तो उनका भी संकलन किया जायेगा।

संस्कृत भाषा के लिए नवीन नवाचार की संभावनाओं को चर्चा में लाकर विद्यालयों में उन्हें अपना कर निष्कर्ष के लिए प्रेरित किया जायेगा।

फालोअप :- प्रशिक्षण पश्चात मास्टर ट्रेनरों को स्कुलों के फालोअप हेतु निर्देश देकर स्कुलों में होने वाली गुणवत्ता सुधार (परिवर्तन) का आंकलन संकलित किया जायेगा।

अपेक्षित सुधार :—

1. बच्चे संस्कृत में संभाषण कर सकेगें।
2. छात्रों में संस्कृत भाषा कौशल का विकास हो सकेगा।
3. संस्कृत भाषा शिक्षण की व्यवहारिक कठिनाइयों की प्रवृत्ति होने पर शिक्षण रूचिकर होगा।
4. भाषायी शिक्षण में कक्षा का वातावरण निर्माण हो सकेगा।

अनुमानित बजट :— इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 60000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 5
"शैक्षिक सामग्री निर्माण"

प्रस्तावना :–

वर्तमान में शिक्षा का स्तर मानक से काफी कम होता जा रहा है। इसका मूल कारण प्रचलित पद्धति का अरूचिकर होना है, शिक्षक केवल पाठों को पढ़ाता है। जिससे विषयवस्तु को समझने में छात्रों को कठिनाई होती है। विभिन्न प्रकार की अवधारणा से छात्र समझ नही पाते है। इस कमी को दूर करने हेतु कक्षा कक्ष का वातावरण शैक्षिक होना चाहिए, तथा कठिन विषय वस्तु की अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु पुस्तक के अतिरिक्त अन्य सामग्री परिवेश से संबंधित सामग्री का होना आवयश्क हो जाता है। इस सामग्री के निर्माण शिक्षकों की समझ एवं कौशल का उपयोग करके किया जाना होगा।

उद्देश्य :–

1. शिक्षक स्वयं विषय संबंधी अवधारणात्मक कौशल विकसित कर सकते है।
2. छात्रों को कठिन विषयों को सरलता से समझाया जा सकता है।
3. गतिविधि आधारित कार्य (पढ़ाई) होने के कारण शिक्षक एवं छात्रों की कार्य विषय वस्तु में बनी रहेगी।
4. छात्रों को स्वयं करने सीखने के अवसर प्राप्त होंगे।

लक्ष्यक्षेत्र / क्रियाकलाप :–

इस कार्य हेतु कोरबा जिले के समस्त पांच विकासखण्डों के 40 प्राथमिक शाला तथा 60 माध्यमिक शालाओं कुल 100 शालाओं का चयन किया जायेगा।

गतिविधि / क्रियाकलाप :–

डाइट स्तर पर सभी विषय के कोरबा जिले के प्रत्येक विषय के 10-10 शिक्षकों का चयर कर कार्यशाला का आयोजन करके विषय वस्तु से संबंधित कठिन बातों को सरल करने हेतु सामग्री गतिविधि आदि का निर्माण किया जायेगा।

निर्मित सामग्री/गतिविधियों को प्रायोगिक तौर पर प्रत्येक विकासखण्ड की दो शालाओं पर प्रयोग किया जायेगा। स्थानीय स्तर पर सामाग्री में नवाचार किया जायेगा।

इस कार्य का पर्यवेक्षण समस्त डाइट स्टाफ के द्वारा एवं बी.ई.ओ., बी.आर.सी.सी., सी.ए.सी. एवं ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों के द्वारा किया।

आपेक्षित परिणाम :–

1. पाठ्य सहगामी वस्तुओं एवं गतिविधि के प्रयोग से छात्रों को कठिन विषय को समझने में आसानी होगी।
2. छात्र स्वयं प्रयोग करके सीखेंगे जिससे उनका कौशलात्मक विकास होगा। तथा सीखी गई बातें स्थायी तौर पर उनके मस्तिष्क में रहेगी।
3. शिक्षकों को भी पाठ्यपुस्तक समझाने में सरलता होगी।
4. इसके प्रयोग से बच्चों को मनोरंजक तरीके से खेल-खेल में पाठ्य वस्तु का ज्ञान दिया जा सकेगा।
5. ये वस्तुएं/गतिविधियां मनोरंजक तरीके से छात्रों को पाठ्य वस्तु समझाने हेतु होगी। इससे छात्रों की रूचि कक्षा सदन में अध्ययन हेतु बनी रहेगी।

बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 200000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

<u>प्रायोजना – 6</u>
<u>''सामुदायिक सहभागिता''</u>

प्रस्तावना :–

वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में बालकों के सम्पूर्ण विकास हेतु केवल पुस्तकीय ज्ञान ही पर्याप्त नही है। पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त उन्हें आसपास के परिवेशीय ज्ञान की जानकारी भी होना आवश्यक है। जैसे :- बढ़ाई, मिस्त्री, सिलाई-कढ़ाई, बुनाई खेती किसानी आदि।

ये समस्त जानकारी उन्हें समाज से ही प्राप्त हो सकती है। अतः शिक्षा के कार्य में सामुदायिक सहभागिता आवश्यक हो जाती हे। शाला एवं शिक्षण के विकास के लिए समाज की सहभागिता जरूरी है।

उद्देश्य :–

1. बालकों का समाज से जोड़ना।
2. पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त अन्य व्यवसायिक जानकारी प्रदान कराना।
3. शाला की देखरेख जनभागीदारी के द्वारा कराना।
4. शाला संचालन हेतु स्थानीय स्तर की आवश्यकता की पूर्ति कराना।
5. समाज को जागरूक करना।
6. शाला के प्रति आकर्षण बढ़ाना।
7. शासन की योजनाओं की जानकारी प्रदान करना।

लक्ष्य क्षेत्र :–

प्रत्येक विकासखण्ड का एक संकुल, जिसमें एस.एम.सी. सदस्य, संकुल केन्द्र के सभी शिक्षक, ग्रामीणजन एवं संकुल के आश्रित शालाओं के एक-एक शिक्षक शामिल होंगे।

गतिविधि / क्रियाकलाप :–

1. जिले के पांचो वि.ख. से 1-1 संकुल का चयन किया जावेगा।
2. संकुल केन्द्र में सामुदायिक सहभागिता हेतु एकदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जावेगा।
3. इस कार्यक्रम में संकुल केन्द्र के सभी शिक्षक, एस.एम.सी. सदस्य तथा ग्रामीण जन एवं संकुल को आश्रित स्कुलों से दो-दो एस.एम.सी. सदस्य व एक-एक शिक्षक शामिल होंगे।
4. इस कार्यक्रम में सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ उपिस्थत लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से प्रेरक भाषण, प्रेरक गीत, विडियो क्लीप्स समय-समय पर प्रस्तुत किये जायेंगे।
5. कुछ प्रबुद्ध वर्गो स्कुल के प्रति उनके विचार, समस्याओं के प्रति उनका सहयोग प्रत्यक्ष रूप से सुने जायेंगे।
6. बच्चों और ग्रामीण जन को प्रोत्साहन स्वरूप कुछ पुरस्कार वितरित किये जायेंगे।
7. संकुल केन्द्र पर प्रातः कालीन एक प्रभातफेरी सामुदायिक सहभागिता पर आधारित निकाली जावेगी।
8. पाम्पलेट तैयार कर वितरित किया जावेगा।

अनुश्रवण :– उक्त कार्यो का मानीटरिंग डाइट के प्राचार्य, उप प्राचार्य एवं अकादमिक सदस्यों द्वारा किया जावेगा।

अपेक्षित परिणाम :–

1. शाला और समुदाय में समन्वय स्थापित होगा।
2. ग्रामीणों में शाला के प्रति समर्पण की भावना जागृत होगा।
3. बालकों में अध्ययन के प्रति रूचि जागृत होगा।
4. शाला की समस्याएँ हल होगी।
5. शिक्षक और समुदाय के मध्य मधुर संबंध बनेगा।

बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 75000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 7
''MOOC (Massive Open Online Course)''

प्रस्तावना :–

इक्कीसवीं सदी कम्प्यूटर युग के नाम जाना जाता है लेकिन दुर्भाग्य है कि आज भी अधिकांश लोग कम्प्यूटर ज्ञान से वंचति है। जैसे कम्प्यूटर को खोलना, नेट का प्रयोग करना, वेबसाइट खोलना आदि। प्रधानमंत्री जी का सपना है कि भारत डिजीटल इंडिया बने। शिक्षा गुणवत्ता के सुधार की दिशा में कम्प्यूटर (आई.सी.टी.) का ज्ञान अपना महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है।

उद्देश्य :–

1. आई.सी.टी. की जानकारी दना।
2. आई.सी.टी. के प्रयोग करने की क्षमता का विकास करना।
3. नेट का प्रयोग कर वेबसाइट खोलने की क्षमता का विकास करना।
4. आनलाइन सेवाओं की जानाकरी प्राप्त करने की क्षमता का विकास करना।
5. ई-मेल बनवाना, ईमेल भेजना व ई मेल खोलने की क्षमता का विवाह करना।

लक्ष्य क्षेत्र / लक्ष्य समूह :–

डी.एल.एड के 200 छात्राध्यापक तथा डाइट के 15 आकदमिक सदस्य कुल 215 प्रतिभागी।

कार्ययोजना / क्रियान्वयन :–

यह कार्यशाला दो चरणों में सम्पन्न होगी। प्रथम चरण में आई.सी.आई. का प्रशिक्षण द्वितीय चरण में प्रायोगिक रूप से प्रशिक्षण कराना।

1. आई.सी.टी. का प्रशिक्षण के प्रथम चरण में डी.एल.एड के 200 छात्राध्यापक व 15 अकादमिक सदस्य कुल 215 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया जायेगा।
2. पहले 100 प्रतिभागियों को डाइट कोरबा में 5 दिवसीय प्रशिक्षण (आई.सी.टी.) का चार विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण दिया जायेगा।
3. इस प्रशिक्षण के मुख्य बिन्दु होंगे जो सिखाना है -
   1. कम्प्यूटर खोलना/बंद करना।
   2. ई मेल बनाना/ई मेल खोलना/ई मेल भेजना
   3. वेबसाइट खोलना व गुगल सर्च करना।
   4. आनलाइन फार्म भरना/आनलाइन रजिस्ट्रेशन करना।
   5. नेट का प्रयोग करना।
4. यह प्रशिक्षण दो चरणों में पांच दिवसीय होगा।
5. पांच दिवसीय प्रशिक्षण का एक अध्ययन सामग्री/संदर्भित प्रशिक्षण के पूर्व तैयार कर लिया जायेगा।
6. प्रशिक्षण समाप्ति के एक माह बाद पुनः दो दिवसीय प्रशिक्षण दो चरणों में सम्पन्न कराया जायेगा। जिसमें उन्हें स्वयं (आई.सी.टी.) से संबंधित कार्यो को करके दिखाना होगा। कठिनाइयों का समाधान विशेषज्ञों द्वारा किया जायेगा।
7. फिर उनका MOOC के अंतर्गत Tess India में Registrations का सूक्षम अध्ययन जोAssignment होंगे उन्हें हल करेंगे।
8. इस दौरान जो भी कार्य करेंगे उसका हार्ड कॉपी प्रतिभागी डाइटको उपलब्ध करायेंगे।
9. छात्राध्यापकों व अकादमिक सदस्य जब इस कार्य को कर पायेंगे तो प्रत्येक छात्राध्यापक व अकादमिक सदस्य कम से कम पांच शिक्षकों (जिले के) को रजिस्ट्रेशन कराकर अपने मार्गदर्शन में MOOC (Tess India) से प्रशिक्षित करेंगे।

अपेक्षित परिणम :–

1. छात्राध्यापक व अकादमिक सदस्य आई.सी.टी. के ज्ञान से परिचित हो सकेंगे।
2. कम्प्यूटर का प्रयोग करना सीखेंगे।
3. ई मेल खोल सकेंगे।
4. गूगल सर्च में वेबसाइट खोलना सीख सकेंगे।
5. आनलाइन रजिस्ट्रेशन करना सीख सकेंगे।
6. शिक्षा से संबंधित वेबसाइट खोलकर उपयोग करने की क्षमता का विकास कर सकेंगे।

प्रस्तावित बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 200000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 8
''BEO/BRC/ABEO आदि का उन्मुखीकरण''

प्रस्तावना :–

जिले में शिक्षा गुणवत्ता में सुधार हेतु जिले के विकासखण्डों के शिक्षा अधिकारी/कर्मचारियों से समन्वय अति आवश्यक है, समन्वय के अभाव में कार्य सुचारू रूप से करने में अनेक बाधाएं आती है। अतः जिले में उनका एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम रख कर इस समस्या का समाधान किया जा सकता है। जिसमें जिला डाइट में हो रहे कार्यक्रमों का क्रियान्वयन, उसका परिणाम व शिक्षकों की उपलब्धता, राज्य की शैक्षिक जानकारी आदि की समीक्षात्मक चर्चा की जा सकती है।

उद्देश्य :–

1. विकासखण्डों की शैक्षिक समस्याओं की चर्चा।
2. डाइट व विकासखण्डों में आपसी समन्वय स्थापित करना।
3. प्रशिक्षण मे शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
4. डाइट के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सक्रिय भागीदारी।
5. मानिटरिंग को प्रभावकारी बनाना।
6. कार्यो के संपादन मे प्रबंधकीय दृष्टिकोण विकसित करना।
7. तार्किक क्षमता का विकास।
8. व्यक्तित्व विकास।

लक्ष्य क्षेत्र / लक्ष्य समूह :–

कोरबा जिले के 5 विकासखंडो के बी.ई.ओ., बी.आर.सी., ए.बी.ई.ओ. व चुने हुये 25 सी.आर.सी. व डाइट के अकादमिक सदस्य कुल प्रतिभागी 50

कार्ययोजना / क्रियान्वयन :–

1. माह अप्रैल 2017 में एक माड्यूल/प्रशिक्षण सामग्री समूह चर्चा के बाद उद्दश्यों को ध्यान में रखकर तैयार की जायेगी।
2. माड्यूल निर्माण के बाद प्रत्येक माह एक उन्मुखीकरण कार्यक्रम एक दिवसीय डाइट कोरबा में रखी जायेगी। जिसमें सभी प्रतिभागियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जावेगी।

अनुमानित बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 50000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 9
''कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं के लिए स्वास्थ्य एवं स्वच्छता आधारित शिक्षा''

प्रस्तावना :–

किसी भी राष्ट्र की प्रगति एवं उत्थान के लिए उस देश की बालिकाओं का स्वस्थ एवं स्वच्छ होना बहुत महत्व रखता है। जिस क्षेत्र स्थान में बालिकाओं के पोषण, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाएगा तो वहां की बालिकाओं का शरीर निर्बल और अशक्त होगा, चूंकि पीढ़ियों का हस्तांतरण इन्हीं पर निर्भर करता है। आज की बालिकाएँ भविष्य में परिवार व समाज का निर्माण करेंगी इसलिए उन्हें अच्छा स्वास्थ्य, पोषण, एवं स्वच्छता संबंधी अच्छी आदतों से परिचित कराते हुए इसके महत्व एवं उपयोगिता के बारे में शिक्षित करना भी अनिवार्य है जाता है अन्यथा यह सामाजिक, मनोवैज्ञानिक समस्या का रूप ले लेता है। अतः स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता संबंधी अच्छी आदतें सिखाना अध्यापकों काए कर्तव्य है।

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता एक सकारात्मक संकल्पना है इसका तात्पर्य है :–

1. सही मात्रा में पौष्टिक एवं संतुलित भोजन
2. पर्याप्त विश्राम तथा आराम, नींद
3. सुरक्षित रहने की भावना
4. सुखद मानवीय संबंध
5. नैतिक मूल्यों के प्रति सजगता

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का सीधा संबंध अनौपचारिकता से है। शिक्षक को चाहिए कि वह अनौपचारिक रूप से बालिकाओं के सर्वोच्च गुणों को उभारने का प्रयास करें।

1. "बालिकाएं प्रकृति की सुन्दरम रचनाओं में से एक है।"
2. "बालिकाएं आने वाली पीढ़ियों का भविष्य संवारती है"।
3. "बालिकाएं इस दुनियां की चमक, खूबसरूती एवं खुशियों की सूचक है।"

इसी परिप्रेक्ष्य में कोरबा जिले के पांच विकासखण्ड में स्थित कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं को उत्तम स्वास्थ्य एवं सम्पूर्ण स्वच्छता की जानकारी देना अनिवार्य सा प्रतीत होता है।

उद्देश्य :–

1. कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं की स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी आदतों का अध्ययन करना।
2. बालिकाओं के पोषण एवं स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों का पता लगाना।
3. बालिकाओं को संतुलित आहार संबंधी जानकारी देना।
4. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी बीमारियों या रोगों के फैलाव को रोकने संबंधी जानकारी देना।
5. स्वास्थ्य एव स्वच्छता संबंधी बीमारियों से बचने के उपाय बताना।

लक्ष्य क्षेत्र :–

कोरबा जिले के पांच विकासखण्ड के कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय।

लक्ष्य समूह :–

500 बालिकाएं

प्रशिक्षण अवधि –

2-2 दिवस

गतिविधि / क्रियाकलाप :–

यह प्रशिक्षण पांच चरणों में होना प्रस्तावित है।

1. जिला शिक्षा अधिकारी से अनुमति लेना।

2. विकासखण्ड शिक्षा अधिकारी से पत्र व्यवहार करना।
3. प्रशिक्षण हेतु समय-सारणी का निर्माण करना।
4. कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय की बालिकाओं के लिए स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी मॉडयूल का निर्माण करना।
5. आश्रम शालाओं का अवलोकन करना।
6. बालिकाओं का प्री टेस्ट एवं पोस्ट टेस्ट लेना।
7. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी जानकारी देने के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ता के द्वारा विशेष जानकारी देने की व्यवस्था करना।
8. प्रतिवेदन रिपोर्ट तैयार करना।

फॉलोअप मॉनिटरिंग :–

1. प्रत्येक माह मॉनिटरिंग का रिजल्ट कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय के अधिकारियों से ली जाएगी।
2. 2-3 माह में एक डाइट, सहायक प्रध्यापक एवं व्याख्याता के द्वारा।
3. वर्ष में एक/दो बार डाइट प्राचार्य/उपप्राचार्य के द्वारा मॉनिटरिंग किया जाना प्रस्तावित है।

अपेक्षित परिणाम :–

1. कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं की स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता आदतों में सुधार एवं परिवर्तन दृष्टिगत होगा।
2. कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों की बालिकाओं में संतुलित आहार की जानकारी होगी एवं वे अपने स्वास्थ्य, पोषण, एवं स्वच्छता के प्रति जागरूक होंगी।
3. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी बुरी आदतों से अलग से सकेंगी।
4. स्वास्थ्य एवं सवच्छता संबंधी बीमारियों के या रोगों से अपना बचाव कर सकेंगी।
5. स्वास्थ्य, पोषण एवं स्वच्छता संबंधी अच्छी आदतों के प्रति उनकी नजरिया अच्छा सकेगा तथा जीवन भर वे इनका नियमों का पालन कर स्वस्थ्य एवं स्वच्छ रह सकने में समर्थ हों पाएंगी।

बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 50000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 10

उत्कृष्ट शिक्षको को प्रोत्साहन व सम्मान (Best Practices)

प्रस्तावना :– **जिला कोरबा में अनेको शिक्षकों द्वारा अपने-अपने शालाओं में शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य किया जा रहा है | समय-समय पर उनके द्वारा शैक्षिक नवाचार भी किया जाता रहा है | ऐसे शिक्षको को यदि समय-समय पर प्रोत्साहित और सम्मानित किया जाए तो वे और भी अच्छा कर सकते हैं | अतः ऐसे उत्कृष्ट शिक्षको को प्रोत्साहित और सम्मानित करने के लिए डाईट कोरबा में दो दिवसीय कार्यक्रम रखा जा सकता है |**

उद्देश्य :–

1. **शिक्षको को प्रोत्साहित करना |**
2. **शिक्षा के गुणवत्ता में विकास करना |**
3. **शालाओं के शैक्षिक स्तर में सुधार करना |**
4. **शिक्षको में नवाचार को बढ़ावा देना |**
5. **शिक्षको में प्रतियोगिता की भावना उत्पन्न करना |**

अवधि :– **02** दिन

कार्ययोजना :–

1. विकास खण्ड शिक्षा अधिकारियो के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार या उत्कृष्ट कार्य करने वाले सर्वोत्तम पांच-पांच शिक्षको (05 प्राथमिक और 05 माध्यमिक) की सूची लेना |

2.चूँकि जिला कोरबा में पांच विकास खण्ड है अतः कुल 50 शिक्षको से उनके द्वारा किये गये नवाचार का हार्ड व सॉफ्ट कॉपी पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन के लिए मंगाना |

3.डाईट कोरबा में दो दिवसीय कार्यक्रम की तैयारी करना |

4.उक्त कार्यक्रम में शिक्षा से जुड़े अधिकारी,कर्मचारी,शिक्षाविद् तथा जनप्रतिनिधि आदि को आमंत्रित करना |

5.चयन समिति के समक्ष सभी 50 प्रतिभागियों की प्रस्तुतीकरण कराया जाएगा |

6.इस प्रकार प्राथमिक स्तर से 03 शिक्षक तथा माध्यमिक स्तर के 03 शिक्षको का चयन करके उन्हें निर्धारित पुरुस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा |

अनुमानित बजट :– **इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 100000/- रूपये होगी।**

प्राचार्य
डाइट कोरबा छ. ग.

प्रायोजना – 11

''डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के तहत कमतर प्रदर्शन करने वाले शालाओं के शिक्षकों का उन्मुखीकरण''

प्रस्तावना :–

छ.ग. राज्य के माध्यमिक स्तर तक के विद्यालय में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित किये जाने के लिये राज्य शासन ने सत्र 2015-16 से डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान प्रारंभ किया है। स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा विद्यालयों की गुणवत्ता के विभिन्न मानकों के आधार पर शाला मूल्यांकन प्रारूप (Rubrics) का निर्माण किया है। जिसमें विद्यालयीन गुणवत्ता के प्रमुख घटकों के संबंध में प्रश्नावली तैयार किया गया है। इन प्रश्नावली के माध्यम से गुणवत्ता के आधार पर ग्राम सभा के द्वारा मूल्यांकन कर विद्यालयों को A,B,C,D ग्रेड प्राप्त होता है। जिन विद्यालयों को सी. या डी ग्रेड प्राप्त होगा, उन विद्यालयों को चिन्हित कर वहां सुधार किया जाता है। इसी दिशा में डाइट कोरबा द्वारा भी गत शैक्षणिक वर्ष 2015-16 एवं 2016-17 में जिला कोरबा के कुल 612 तथा 607 प्राथमिक/उच्च प्राथमिक शालाओं को सी या डी ग्रेड प्राप्त होने पर वहां के कुल 783 तथा 507 शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया गया था। प्रशिक्षण के बाद उन शिक्षकों से प्राप्त प्रतिवेदन से जानकारी मिला कि इस प्रकार का प्रशिक्षण शिक्षा की गुणवत्ता सुधार के लिये अत्यंत उपयोगी है। जिसे आगामी शैक्षणिक सत्रों में भी आयोजित किया जाना चाहिये। अतः डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के तहत् इस शैक्षणिक सत्र 2017-18 में भी कमतर प्रदर्शन करने वाले शालाओं के शिक्षकों के लिये यह उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्य :–

1. विद्यालयों में प्रभावी शिक्षण हेतु अनुकूल वातावरण तैयार करना।
2. शिक्षा में नवाचार को प्रोत्साहित करना।
3. सहायक शिक्षण सामग्री का कक्षाओं में अधिक से अधिक उपयोग करने को प्रोत्साहित करना।
4. शाला विकास योजना तैयार कराना।
5. बच्चों में सर्वांगीण विकास हो यह सुनिश्चित करना।
6. शासन द्वारा निर्धारित प्रारूप (Rubrics) के मानक स्तरों को प्राप्त करना।
7. विभिन्न कक्षाओं के न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त करना।

लक्ष्य :–

जिले में डॉ. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के तहत् कमतर प्रदर्शन करने वाले सभी शालाओं के 1-1 शिक्षक को प्रशिक्षण कार्यक्रम में आमंत्रित करना।

स्त्रोत व्यक्ति :–

इस प्रशिक्षण में कार्यक्रम समन्वयक संस्था के उप प्राचार्य तथा मास्टर ट्रेनर के लिये संस्था से दो अकादमिक सदस्य तथा संस्था के बाहर विभिन्न शालाओं से 3 प्रशिक्षित और अनुभवी शिक्षक होंगे।

कार्य योजना :–

यह प्रशिक्षण शालाओं के प्रथम मूल्यांकन के बाद संभवतः अगस्त 2017 के तृतीय सप्ताह से प्रारंभ होगा इस हेतु संबंधित विभाग से कमतर प्रदर्शन करने वाले शालाओं की सूची प्राप्त की जावेगी इसके बाद माह अगस्त 2017 के प्रथम सप्ताह में 8 दिवसीय कार्यशाला में संदर्शिका, टूल्स तथा समय सारिणी का निर्माण कराया जायेगा।

बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 600000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 12

"कोरबा जिला के पी.एल.सी. शिक्षकों का गठन तथा उनका उन्मुखीकरण"

प्रस्तावना :–

पी.एल.सी. अर्थात् ऐसे विषय विशेषज्ञ शिक्षकों के समूह जो एस.सी.ई.आर.टी. से उपलब्ध फ्रेमवर्क को अपनी स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार स्वयं, सरल-सहज और प्रभावी डिजाइन तैयार कर कक्षाओं में लागू कर छात्र-छात्राओं का अधिगम स्तर ऊपर उठाने में मदद कर विद्यालयों में बेहतर शैक्षिक वातावरण बना रहे हैं। ऐसे में इन शिक्षकों का अपने आस-पास के विद्यालयों में और बेहतर जुड़ाव तथा सक्रियता बढ़े, एवं हमारे शिक्षक साथियों को अपने ही बीच के शिक्षक साथी का अकादमिक सहयोग मिले। इस हेतु इनका उन्मुखीकरण अत्यंत आवश्यक होता है, ताकि पाठशालाओं में गुणवत्ता, सुधार के प्रयास निरंतर चलता रहे।

उद्देश्य :–

1. शिक्षकों का क्षमता विकास करना।
2. कक्षा का वातावरण रोचक बनाना।
3. शिक्षकों के आपस में अकादमिक वार्तालाप शुरूआत करना एवं अवसर प्रदान करना।
4. शैक्षणिक कठिनाइयों को दूर करना।
5. पी.एल.सी. को सक्रिय एवं कारगर बनाना।

Professional Training Community के माध्यम से प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों के क्षमता विकास कार्यक्रम (Dr. A.P.J. Abdul Kalam शिक्षा गुणवत्ता अभियान छत्तीसगढ़ 2016-17 के तहत)।

गतिविधि :–

1. कोरबा जिले के पॉचों विकासखण्डों की संकुलवार पी.एल.सी. सदस्यों की सूचियॉ प्राप्त करना।
2. प्रशिक्षण पूर्व प्रशिक्षण की संदर्शिका तथा अन्य सामग्री निर्माण हेतु कार्यशाला (का डाइट में) आयोजन करना।
3. प्रशिक्षण हेतु मास्टर ट्रेनर्स का चयन कर उनका प्रशिक्षण (एक चरण में) कराना।
4. पी.एल.सी. सदस्यों का प्रशिक्षण 5 दिवसीय तीन चरणों में प्रत्येक चरण में 200 (दो सौ) सम्मिलित करना।
5. प्रशिक्षण हेतु पी.एल.सी. सदस्यों द्वारा फील्ड में किये जा रहे सराहनीय कार्यों का विडियो उपलब्ध कराना।
6. वर्तमान शिक्षा सत्र का चर्चा प्रपत्र उपलब्ध कराना।
7. प्रशिक्षण के विभिन्न सत्रों के लिए आवश्यक सामग्री एवं संदर्भ साहित्य उपलब्ध कराना।

फालोअप मानीटरिंग :–

डाइट के अकादमिक सदस्यों के द्वारा प्रत्येक विकासखण्ड का मानीटरिंग एवं अकादमिक सहयोग किया जावेगा। मानीटरिंग प्रपत्र के अनुसार डाटा संकलन एवं तदनुरूप कार्य योजना बनाकर सतत मार्गदर्शन करना। विकासखण्ड स्तर एवं जिला स्तर हेतु मानीटरिंग टीम का गठन कर उन्हें सक्रिय सहभागिता हेतु मार्ग निर्देशित करना।

अपेक्षित परिणाम :–

1. शिक्षकों का शिक्षा एवं सीखने-सिखाने की नजरिये में सकारात्मक बदलाव।
2. शिक्षकों द्वारा शैक्षणिक गुणवत्ता हेतु प्रयासरत दिखना।
3. विद्यालय एवं कक्षा-कक्ष के अंदर का वातावरण Prince Rich से समृद्ध होता दिखना।
4. शैक्षणिक कठिनाइयों को दूर करने हेतु शिक्षकों का आपस में वार्तालाप प्रारंभ होना।

5. P.L.C. ग्रुप का Self Motivation का फील्ड में नजर आना।

लक्ष्य क्षेत्र :–

जिला कोरबा के पॉचों विकासखण्ड क चयनित विषय शिक्षक।

लक्ष्य समूह :–

प्रत्येक विषय के उच्च प्रा. स्तर से कुल 60 शिक्षक व प्रा. स्तर के कुल 30 शिक्षक 10 M.T.S. कुल प्रतिभागी = 100

अनुमानित बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 200000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 13

''कोरबा जिले के उच्च प्रा. शालाओं के शिक्षकों का कम्प्यूटर प्रशिक्षण''

प्रस्तावना :–

हमारा अपेक्षित लक्ष्य बच्चों में निर्धारित सीमा में उत्तरोत्तर गुणवता विकास का है जिसके लिए बच्चों को पढ़ाने के लिए नवीनतम विधियों एवं तकनिकीयों का इस्तयाल किया जा सके। वे सभी विधियों एवं तकनिकियां जिनका हम बच्चों को पढ़ाने के लिए इस्तमाल करें उनका रूचिकर होना एवं सरल होना अतिआवश्यकता है।

वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर बल दिया गया है कि पाठ्यक्रम लागू करते समय, पाठ रटने को प्रोत्साहन न देकर, बाल केन्द्रित एवं कम्पयूटर आधारित शिक्षण को विशेष महत्व दिया जाय। किन्तु वर्तमान शिक्षण पद्धति मे कम्प्यूटर आधारित शिक्षण का अभाव देखा जा रहा है जिसके कारण हमारा शैक्षिक कार्यक्रम प्रेरणा विहीन एवं अरूचिकर हो गया है जिसके कारण हमें अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त नही हो पा रहा है।

अपेक्षित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हमें कम्प्यूटर को शिक्षक के रूप में इस्तमाल करना चाहिए जिससे शिक्षण कार्य को आकर्षक एवं रूचिकर बनाया जा सके तथा बच्चो की समस्याओं का समाधान में त्वरित गति से हो सकें।

कम्प्यूटर के प्रयोग के लिए कम्प्यूटर संबंधी ज्ञान होना बहुत जरूरी है।

आवश्यकता / महत्व :–

अपेक्षित सफलता हासिल करने के लिए हमे शिक्षण कार्य को रूचिकर बनाने कि आवश्यकता है जिसके लिए कम्प्यूटर आधारित शिक्षण बहुत जरूरी है। बच्चों की समस्याओं का जल्द-जल्द से समाधान हो सके उसके लिए हमे कम्प्यूटर का प्रयोग करना ही पड़ेगा। कम्प्यूटर का सही इस्तेमाल हो उसके लिए कम्प्यूटर चलाने का ज्ञान होना अतिआवश्यक है इसलिए प्रशिक्षण संस्थाओं मे समय-समय पर कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जाते है। कम्प्यूटर के माध्यम से हम अपनी आवश्यकता अनुसार जानकारियॉ तुरन्त प्राप्त कर सकते है।

उद्देश्य :–

1. कम्प्यूटर का उपयोग कर पढ़ाई को रूचिकर बनाना।
2. बच्चों की समस्याओं का समाधान त्वरित गति से कर पान।ा
3. बच्चों को समझाने के लिए नवीन विधियों का जानकारियां प्राप्त करना।
4. शिक्षा के क्षेत्र में होने वाले नये-नये अनुसंधानों के संबंध में जानकारियॉ प्राप्त करना।
5. नेट का प्रयोग करना सीखना।
6. कम्प्यूटर में साफ्टवेयर का प्रयोग करना सीखना।
7. नेट के माध्यम से शिक्षा संबंधी वेवसाइट के प्रयोग के संबंध मे जानना।
8. सभी प्रकार के पत्र टंकण करना सीखना।
9. नेट का प्रयोग कर संदेश भेजना एवं प्राप्त करना।
10. कम्प्यूटर में गणितीय गणना करना सीखना।

लक्ष्यक्षेत्र / लक्ष्य समूह :–

कोरबा जिले के पांचों विकासखण्डों के उच्च प्राथ. शालाओं में 100 शालाओं के 100 शिक्षक

गतिविधि / क्रियाकलाप / कार्यप्रणाली :–

कम्प्यूटर विषय विशेषज्ञों द्वारा कम्प्यूटर के संबंध में निम्नानुसार जानकारियॉ दी जायेंगी।

1. कम्प्यूटर उपकरणों के संबंध में जानकारियॉं।
2. कम्प्यूटर को प्रारम्भ करना एवं बंद करना सीखना।
3. कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ाना।
4. नेट का प्रयोग करना सीखना।
5. कम्प्यूटर मे साफ्टवेयर का प्रयोग करना सीखाना।
6. हमारे एवं छात्रो के आवश्यकता अनुसार जानकारियां कहां प्राप्त होगी यह सीखाना।

फालोअप / मानिटरिंग :–

सिखाई गई समस्त विधाओं की समय-समय पर मानिटरिंग कि जायेगी एवं उसमें सुधार किया जायेगा। समय-समय पर विधाओं का नवीनीकरण किया जायेगा।

अपेक्षित परिणाम :–

1. कम्प्यूटर चलाना सीख जायेगें।
2. कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षण कार्य कराना जायेगा।
3. नेट का प्रयोग करना सीख जायेंगे।
4. कम्प्यूटर के उपयोग कर समस्याओं का समाधान प्राप्त कर पायेगें।
5. पढ़ाई को रूचिकर बनाने के लिए कम्प्यूटर के माध्यम से प्राप्त नवीन विधियों का प्रयोगकरना सीख जायेगें।
6. पत्र टंकण करना सीख जायेगें।
7. संदेश भेजना एवं प्राप्त करना सीख जायेगें।

बजट :- इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 100000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 14

''प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों हेतु अध्याापन कौशल प्रशिक्षण''

प्रस्तावना:–

शिक्षकों की गुणात्मक योग्यता को बढ़ाने के लिए अध्याापन कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है।प्रत्येक शिक्षक समस्त प्रकार के अध्यापन कौशल में पारंगत नहीं होता शिक्षक जिस किसी भी अध्यापन कौशल में निपूर्ण नही है या उसमें कोई कमी है उस कमी को कौशल प्रशिक्षण के द्वारा पूरा किया जायेगा। जिससे शिक्षकों के अन्दर सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक दोनो पक्षों का गुणात्मक विकास संभव हो पायेगा। इस प्रशिक्षण के माध्यम से शिक्षकों के अधिगम शैली तथा कक्षा को रोचक ,सजीव एवं पाठ्यवस्तु को अधिक ग्राह्य एवं छात्र ध्यान केंद्रित बनाया जायेगा।

उद्देश्य:–

1. शिक्षकों के अन्दर सैद्धान्तिक व प्रायोगिक पक्षों का गुणात्मक विकास करना।
2. छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर अध्यापन करना।
3. छात्रों के अधिगम को बढ़ाना।
4. छात्रों का कक्षागत परिस्थितियों में विकास करना।
5. अध्यापन की जटिलताओं को कम करना।
6. शिक्षकों को छात्र बोध की जांच में प्रवीण करना।
7. शिक्षकों को प्रबलन,प्रश्न,व्याख्यान,श्यामपट,दृष्टान्त आदि कौशलों में पारंगत करना।

लक्ष्य क्षेत्र:–

कोरबा जिले के पांच विकास खण्ड के प्राथमिक व उच्च प्राथमिक शाला के 50-50 शिक्षक।

गतिविधि:–

1. अध्यापन कौशल संदर्शिका का निर्माण मई माह में किया जायेगा।
2. संदर्शिका निर्माण में शिक्षकों का सहयोग लिया जायेगा।
3. पुनर्बलन,खोजपूर्ण प्रश्न,व्याख्या,दृश्टांत,उद्दीपन परिवर्तन,श्यामपट लेखन तथा प्रस्तावना कौशल संबंधी प्रशिक्षण आयोजित किया जायेगा।
4. यह प्रशिक्षण तीन दिवसीय रहेगा।

अनुश्रवण(Monitoring):-

प्रशिक्षण के पश्चात् दो माह तक अनुश्रवण किया जायेगा।

अपेक्षित परिणाम:–

1. शिक्षक अध्यापन कौशल में प्रवीण हो सकेंगे।
2. छात्रों के अधिगम स्तर में वृद्धि होगी।
3. छात्र बहिर्मुखी होंगे और विशय को समाज से जोड़ पायेंगे।
4. छात्रों के अधिगम संबंधी कठिनाइयों को समझकर शिक्षक अध्यापन कार्य करेंगे।

बजट:– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 100000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 15

विज्ञान प्रयोगशाला को विकसित करना

प्रस्तावनाः–

प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शालाओं के शिक्षकों को विज्ञान विशय को गतिविधियों एवं प्रयोग के माध्यम से अध्यापन करने कराने की आवश्यकता है। विज्ञान विशय को प्रयोग व गतिविधियों के माध्यम से अध्यापन करने के लिए विशय से संबंधित शिक्षण सामग्री पाठ्यक्रम के अनुसार उपलब्ध होना चाहिए।प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक शाला के विज्ञान में दी गई गतिविधियों को करने के लिए स्व् बेंज दक छव बेंज सामग्री से किसा जा सकता है। इसलिए शिक्षको के Low cast and No cast सामग्री के विकास के लिए विज्ञान प्रयोगशाला विकसित करने की आवश्यकता है।

उद्देश्यः–

1. शिक्षकों में शिक्षण हेतु सैद्धान्तिक के साथ-साथ प्रायोगिक पक्षों का गुणात्मक विकास करना।
2. छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखकर अध्यापन करना।
3. विज्ञान विशय पर छात्रों के अधिगम को बढ़ाना।
4. छात्रों का कक्षागत परिस्थितियों में विकास करना।
5. अध्यापन की जटिलताओं को कम करना।
6. शिक्षकों को गतिविधि आधारित शिक्षण में प्रवीण करना।

लक्ष्य क्षेत्रः–

डाइट कोरबा में विज्ञान प्रयोगशाला को विकसित करना

गतिविधिः–

1. आसपास पाए जाने वाले अनुपयोगी पदार्थों का संकलन कर सहायक शिक्षण सामग्री बनाना।
2. कुछ प्रयोगों के लिए साइन्टिफिक वर्क्स से सामग्री खरीद कर सामग्री का निर्माण किया जावेगा।

अनुश्रवण(Monitoring):-

प्रशिक्षण के पश्चात् दो माह तक अनुश्रवण किया जायेगा।

अपेक्षित परिणामः–

1. शिक्षक गतिविधि आधारित अध्यापन कौशल में प्रवीण हो सकेंगे।
2. छात्रों के अधिगम स्तर में वृद्धि होगी।
3. छात्र बहिर्मुखी होंगे और विशय को समाज से जोड़ पायेंगे।
4. छात्रों के अधिगम संबंधी कठिनाइयों को समझकर शिक्षक अध्यापन कार्य करेंगे।

बजटः– इस प्रायोजना हेतु अनुमानित व्यय 100000/- रूपये।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 16

''डाइट कोरबा में न्यूज लेटर व पत्रिका का प्रकाशन ''

प्रस्तावनाः–

किसी भी संस्था में संचालित गतिविधियों,किए गए नवाचारों तथा उल्लेखित कार्यो का दस्तवेजीकरण आवश्यक है। जिससे संस्था अपने विकास के नये आयाम तथा आगामी लक्ष्यों को निर्धरित कर सकता है। इस हेतु डाइट कोरबा में न्यूज लेटर का प्रकाशन किया जाना है। न्यूज लेटर के माध्यम से छिपी हुई प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर मिलता है।न्यूज लेटर संस्था के विकास में सहायक सिद्ध होता है। इसके प्रचार प्रसार से नये-नये विचार ,सुझाव प्राप्त होते हैं। जो कि संस्था के कार्यो में दिनो दिन उत्तरोत्तर विकास की नवीन सोपानों को प्राप्त करने को अग्रसर होता है।

उद्देश्यः–

1. डाइट द्वारा किए गए कार्यो को सामने लाना।
2. छिपी हुई प्रतिभाओं को उभारना।
3. नवाचार को बढ़ावा देना।
4. साहित्यिक गतिविधियों को कक्षा अध्यापन में शामिल करना।
5. प्रतिभाओं का विकास करना।
6. छात्राध्यापकों को पर्यावरण रखरखाव एवं स्वच्छता के लिए प्रेरित करना।
7. डाइट के उत्तरोत्तर विकास कें लिए लिखित दस्तावेज तैयार करना।
8. प्रशिक्षण को और बेहतर बनाने के लिए सुझाव प्राप्त कर कार्यो में गुणवत्ता लाना।

लक्ष्य क्षेत्र :–

डाइट कोरबा के समस्त छात्राध्यापक एवं स्टाफ।

गतिविधिः–

1. संस्था के सभी प्रकोष्ठ के प्रभारियों को उनके द्वारा किए गये कार्यो के फोटोग्राफ सहित प्रतिवेदन दो दिवस के भीतर एक प्रति स्वमेव न्यूज लेटर विभाग में हार्ड एवं साफ्ट कापी में जमा करेंगे। इस प्रकार.डाइट कोरबा में सम्पन्न हुए विभिन्न प्रशिक्षण,कार्यशाला,खेलकूद संस्थान के छात्राध्यापकों एवं स्टाफ सदस्यों के लेख,कविता एवं विशिश्ट कार्यो के लेख फोटोग्राफ सहित संकलित किया जायेगा।
2. संकलन कर्ता जानकारियों का संग्रह करके सम्पादक एवं सहसम्पादक से मिलकर प्रकाशित किए जाने वाली जानकारियों का चयन कर कम्प्युटर लेखन का कार्य कराएगा।
3. कम्प्युटर लेखन एक नमूना प्रति में त्रृटि सुधार कर पुनः लेखन करायेगा।
4. पुनर्लेखन पश्चात् प्राचार्य से अनुमोदन कराकर मुद्रण सम्पन्न करायेगा।
5. मुद्रण पश्चात् छत्तीसगढ़ राज्य के 16 डाइट,2 ए.आई.एस.ई.,2 बी.टी.आई ,1सी.टी.ई,27 डी.ई.ओ,कोरबा जिले के 5 बी.ई.ओं, 5 बी.आर. सी.118 सी.ए.सी. ,25 अभ्यास शालाओं, 200 छात्राध्यापकें, 28 स्टाफ सदस्यों एवं एस.सी.ई. आर.टी.शंकर नगर ,रायपुर को प्रसारित किया जावेगा। केल 400 प्रति मुद्रण कराया जावेगा।
6. सत्र में तीन तिमाही न्यूज लेटर तथा एक वार्शिक पत्रिका का प्रकाशन किया जायेगा।

अनुश्रवणः–

विभाग के उच्चातिधकारियों द्वारा मानिटरिंग की जायेगी एवं उनके द्वारा दिये गये सुझावों पर अमल किया जायेगा।

अपेक्षित परिणामः–

1. डाइट द्वारा किए जा रहे विभिन्न कार्यो को अन्य संबंधित संस्थाओं में शेयर कर पायेंगे।
2. छात्राध्यापकों में लेखन के प्रति आत्मविश्वास बढ़ेगा।
3. कार्यो में गुणवत्ता का विकास होगा।
4. लोगों की डाइट में जुड़ने की प्रवृत्ति बढ़ेगी।
5. लोगों के विचार जानने का अवसर प्राप्त होगा।

बजट :– इस प्रायोजना हेतु अनुमानित व्यय 100000/- रूपये।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 17

''विज्ञान विषय में उच्च प्राथमिक स्तर पर गुणवत्ता सुधार करना''

प्रस्तावना :–

किसी देश की समृद्धि उसके महत्वपुर्ण घटक भूमि,भू संरचना एवं नागरिकों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है। किसी भी देश के नागरिकों में गुणवत्ता सुधार करने की उम्र उच्च प्राथमिक स्तर की होता है। यदि छात्र उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान विशय को गतिविधि एवं प्रयोगों के माध्यम से अध्ययन कर अपनी समझ बना लेते हैं तो वह उच्च शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के योग्य बन जायेंगे।आज भी कक्षा अध्यापन में शिक्षक पाठ्यक्रम में उल्लेखित गतिविधियों को व्याख्यान के माध्यम से पढ़ाते हैं ,यदि इन्ही गतिविधयों को स्वू बेंज ए छव बेंज सामग्री निर्माण कर प्रयोग के माध्यम से पढ़ाया जाना चाहिए।प्रस्तावित प्रशिक्षण में शिक्षको को शिक्षण सामग्री निर्माण करने एवं विज्ञान किट उपलब्ध कराकर विभिन्न उपकरणों के माध्यम से शिक्षण कैसे करें यह बताया जावेगा।

उद्देश्य:–

1. छात्रों में अध्ययन के प्रति रूचि विकसित करना।
2. छात्रों में विज्ञान के प्रति रूचि विकसित करना।
3. छात्रों में प्रयोग कर निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास करना।
4. छात्रों वर्गीकरण एवं तुलना करने की क्षमता का विकास करना।
5. किसी घटना की जांच करके समझने की क्षमता का विकास करना।
6. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।

लक्ष्य क्षेत्र:–

कोरबा जिला के पांच विकासखण्ड के 10 उच्च प्राथमिक शाला।

गतिविधि:–

1. प्राशिक्षण हेतु विज्ञान उन्मुखीकरण संदर्शिका का निर्माण किया जावेगा।
2. संदर्शिका निर्माण में शिक्षको का सहयोग लिया जायेगाा।
3. यह प्रशिक्षण पांच दिवसीय होगा।
4. इस प्रशिक्षण में शिक्षण सामग्र का निर्माण एवं उनके उपयोग पर चर्चा की जायेगी।
5. अध्ययन अध्यापन के लिए सहयोग किया जावेगा।
6. प्री-टेस्ट एवं पोस्ट टेस्ट लिया जायेगा।
7. लघुशोध के रूप में कार्य सम्पन्न किया जावेगा।

अनुश्रवण:–

प्रशिक्षण के पश्चात दो-तीन माह तक मॉनीटरिंग किया जायेगा और आवश्यक सहयोग दिया जायेगा। आकलन करने के पश्चात् आवश्यकता अनुसार इन्टरवेंशन दिया जायेगा।

अपेक्षित परिणाम :–

1. छात्रों में अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी।
2. छात्रों में कार्य को करने में कमबद्धता का विकास होगा।
3. छात्रों में निष्कर्ष निकालने की क्षमता का विकास होगा।
4. वर्गीकरण एवं तुलना करने में सक्षम होंगे।
5. छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा।

बजट :– इस प्रायोजना हेतु अनुमानित व्यय 120000/- रूपये

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)

प्रायोजना – 18

''क्रियात्मक अनुसंधान''

1. प्रस्तावना :–

क्रियात्मक अनुसंधान समस्या समाधान करना अथवा प्रक्रिया को और अधिक अच्छा करना अथवा संतोष प्रद स्थितियों प्राप्त करने की क्रमबद्ध या व्यवस्थित विधि है। जब तक काई यह अनुभव न करें कि वह वर्तमान स्थितियों सें असंतुष्ट है तथा उन स्थितियों में अपेक्षित सुधार लाना चाहता है तब तक स्थिति में सुधार की कोई संभावना नहीं रहती है और न ही क्रियात्मक अनुसंधान किया जा सकता है।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों का सर्वागीण विकास करना है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये शाला के भीतर तथा बाहर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। यह विद्यालय संचालन की छोटी छोटी समस्याओं कों हल करने हेतु किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान सरल एवं सहज प्रक्रिया है। जिसमें व्यवहारिक पक्षों पर ही बल दिया जाता है।

2. उद्देश्य :–

1. संस्था (शाला) की कार्य प्रणाली में सुधार तथा विकास करना।
2. अनुसंधानकर्ता (अध्यापक) में शिक्षा सें संबंधित विभिन्न समस्याओं की पहचान करने एवं उपयुक्त समाधान खोजने की क्षमता का विकास करना ।
3. सीखने सिखाने की प्रक्रिया को सरल व सुग्राह्य बनाना।
4. शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन, अध्यापक व्यवस्था–संचालन तथा नियोजन के लिए नवीन संदर्भो की खोज करना।
5. अध्यापकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
6. विद्यार्थियों की उपलब्धि में वृद्धि करना।
7. अध्यापकों को चिंतनशील बनाना। उनमें तार्किक सोच का विकास करना।

3. लक्ष्य :–

जिले के 118 शिक्षको कों जो उच्च प्राथमिक शाला में कार्यरत हों। यें शिक्षक प्रत्येक संकुल सें 1–1 होंगे।

4. लक्ष्य क्षेत्र :–

जिले के पाँचों विकास खण्ड के 118 संकुल में से उच्च प्राथमिक विद्यालय के 1–1 शिक्षक होंगे।

5. स्रोत व्यक्ति :–

प्रशिक्षण में प्रशिक्षण देने हेतु सभी मास्टर ट्रेनर्स डाइट के ही होंगे।

6. कार्य योजना :–

यह प्रशिक्षण तीन चरणों में संचालित होगा। प्रथम चरण तीन दिवसीय, द्वितीय चरण दो दिवसीय तथा तृतीय चरण एक दिवसीय होगा। इस प्रशिक्षण हेतु जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, विकास खण्ड शिक्षा अधिकारी, कार्यालय में पत्र व्यवहार करने संकुलों के माध्यम से प्रशिक्षण में बुलाया जायेगा।

प्रथम चरण में :–

1. लघु शोध का अर्थ, उद्देश्य, क्षेत्र आवश्यकता, महत्व के बारें में बताना।
2. डाइट से प्राप्त प्रशिक्षण गणित, पर्यावरण तथा (स्टोरी) वाचन व सृजन का विद्यालयों में प्रभाव का विवेचना।

द्वितीय चरण :–

1. आकड़ो का संग्रहण व विश्लेषण, निष्कर्ष, सुझाव समास्या समाधान।

तृतीय चरण :–

1. कार्यो का हार्ड व साफ्ट कापी में जमा कराने का कार्य।

7. संभावित उपलब्धि :–

इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षार्थी का प्रशिक्षण में सम्मिलित होन का लक्ष्य 118 है। संभवतः 118 शिक्षक उच्च प्राथमिक शाला के उपस्थित होंगे।

8. **बजट :– इस प्रायोजना की कुल अनुमानित व्यय 200000/– रूपये।**

प्राचार्य
डाइट कोरबा

प्रायोजना – 19

''शैक्षणिक भ्रमण''

प्रस्तावना :–

कोई भी व्यक्ति हो यदि उसे कुछ भी सीखना हो तो उसके कई माध्यम हो सकते है। जैसे देखकर, सुनकर, अनुभव के आधार से करके तथा घूम के आदि। इसलिए उसके लिये यह जरूरी है कि उसका दायरा वृहद हो। सीखने के लिये यह बेहद जरूरी है कि उसकी सीखने की ईच्छा शक्ति हो। व्यक्ति अपने सीखने की ईच्छा शक्ति के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान घूम-घूमकर नई-नई तरीकों को सीखता है और अपने कार्य करने की प्रणाली में बदलाव लाता है। कुछ भी सीखने के लिये और अपने कार्य में सुधार लाने के लिये एवं शिक्षा में बदलाव एवं सुधार और रूचिकर बनाने के लिये शैक्षणिक भ्रमण अति आवश्यक है। शैक्षणिक भ्रमण से हमें अपने ज्ञान को विकसित करने और नई-नई जानकारियों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है। इसलिये डाइट के अकादमिक सदस्यों को शैक्षणिक भ्रमण पर जाने की आवश्यकता है।

उद्देश्य :–

1. शिक्षा से संबंधित नई-नई जानकारियां प्राप्त करना।
2. अपने कार्य में सुधार और नवीनता लाना।
3. नई-नई प्रविधियों और तकनीकियों को सीखना।
4. ऐतिहासिक एवं भौगोलिक जानकारी प्राप्त करना।
5. मस्तिष्क के पुनर्ताजगी के लिये।

लक्ष्य क्षेत्र / लक्ष्य समूह :–

मध्यप्रदेश के भोपाल जिला के कुछ चयनित शैक्षणिक संस्थानों में डाइट कोरबा से 10 अकादमिक सदस्य शैक्षणिक भ्रमण के लिये जायेंगे।

गतिविधियां :–

1. चयनित स्थन का भ्रमण कार्यक्रम के लिये एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर से अनुमोदन प्राप्त करना।
2. चयनित स्थान के संबंध में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करना।
3. प्राप्त जानकारियों के आधार पर अपना कार्यक्रम निर्धारित करना।
4. शैक्षणिक भ्रमण के दौरान नवीनतम् जानकारियों को जानना/सीखना/छायाचित्र तथा दस्तावेजीकरण करना।
5. शिक्षा के क्षेत्र में नई-नई प्रविधियों को जानना/सीखना तथा उपयोग में लाना।

अपेक्षित परिणाम :–

1. शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रविधियों का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिये नवीन तकनीकियों की जानकारी मिलेगी।
3. कार्य करने के तरीकों में नवीनता आयेगी।
4. अपने संस्थान में सुधार/नवीनता लाने के लिये कार्य योजना बनाने में आसानी होगी।

बजट :– इस प्रायोजना की अनुमानित व्यय 100000/- रूपये होगी।

प्राचार्य
डाइट कोरबा (छ.ग.)